न्यूज़ टुडे

फॉरेस्ट डिक्लेरेशन असेसमेंट ने '2030 ग्लोबल फॉरेस्ट विज़न (GFV): प्रायोरिटी एक्शंस फॉर गवर्नमेन्ट्स इन 2025' रिपोर्ट जारी की

फॉरेस्ट डिक्लेरेशन असेसमेंट (FDA) को 2015 में **न्यूयॉर्क डिक्लेरेशन ऑन फॉरेस्ट्स** (NYDF) **प्रोग्रेस असेसमेंट** के रूप में स्थापित किया गया था। FDA नागरिक समाज के नेतृत्व में संचालित एक पहल है। इसका प्राथमिक उद्देश्य **NYDF के तहत निर्धारित लक्ष्यों को हासिल करने की दिशा में हुई प्रगति का आकलन** करना है।

- NYDF को **2014 में सरकारों, कंपनियों, देशज लोगों और गैर-सरकारी संगठनों के गठबंधन** द्वारा अपनाया गया था। साथ ही, **2014 के जलवायु शिखर सम्मेलन में इसका समर्थन** किया गया था।
- NYDF **स्वैच्छिक प्रकृति** का है। इसके तहत **10 लक्ष्य** निर्धारित किए गए हैं। **भारत द्वारा अभी तक इसका अनुसमर्थन** नहीं किया गया है।

2030 GFV के अंतर्गत आठ प्राथमिकता वाली कार्रवाइयां

- **महत्वाकांक्षा (Ambition):** राष्ट्रीय जलवायु एवं जैव विविधता योजनाओं और UNFCCC COP-30 परिणामों में वन लक्ष्यों को एकीकृत करना।
- **व्यापार (Trade): कानूनी, निर्वनीकरण, रूपांतरण और क्षरण-मुक्त व्यापार को बढ़ावा** देने के लिए साझेदार।
- **वित्त (Finance):** 2024 में अपनाए गए **"वन कार्बन परिणाम-आधारित भुगतान और क्रेडिट पर वन एवं जलवायु लीडर्स के वक्तव्य"** के अनुरूप वनों के संरक्षण के लिए वित्त-पोषण को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाना।
- **अधिकार (Rights): देशज लोगों (IPs) और स्थानीय समुदायों (LCs) के भूमि अधिकारों** को सुरक्षित करना।
- **पर्यवेक्षण (Supervision):** सरकारों एवं वित्तीय पर्यवेक्षकों के आदेशों में यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि वित्तीय संस्थानों द्वारा **वन-संबंधी जोखिमों का पर्याप्त रूप से आकलन, प्रबंधन और शमन** किया जाए।
- **सब्सिडी:** वनों को नुकसान पहुंचाने वाली **सब्सिडी** को संधारणीय खाद्य प्रणालियों में परिवर्तन, जैव-अर्थव्यवस्था में बदलाव और स्थायी वन प्रबंधन की दिशा में **पुनर्निर्देशित** करना।
- **गवर्नेंस:** भूमि-उपयोग क्षेत्र में **गवर्नेंस को मजबूत करना** तथा उसे वैश्विक प्रतिबद्धताओं के साथ एकीकृत करना।
- **ऋण (Debt):** देशों के ऋण प्रबंधन में **वनों की प्राकृतिक पूंजी के मूल्य को परिसंपत्तियों के रूप में शामिल करके** बहुपक्षीय विकास वित्त में राजकोषीय लचीलापन बढ़ाना।

उपग्रह से प्राप्त इमेज से पता चला कि ओह-युकुल ग्लेशियर का अस्तित्व समाप्त हो गया है

यह पहला ग्लेशियर है, जिसे जलवायु परिवर्तन के कारण **आधिकारिक रूप से पूर्णतया विलुप्त** घोषित किया गया है। **2014 में आइसलैंड के ओह-युकुल ग्लेशियर को डेड (मृत)** घोषित किया गया था। ऐसा इसलिए किया गया था, क्योंकि इसका द्रव्यमान इतना कम हो गया था कि इसकी आगे की और बढ़ने की गति रुक गई थी।

- ओकजोकुल एक **गुंबद के आकार** का ग्लेशियर था। यह **आइसलैंड की राजधानी रेक्जाविक के उत्तर-पश्चिम में ओक शील्ड ज्वालामुखी** के क्रेटर के चारों ओर मौजूद था।
- **अन्य ग्लेशियर जिनका अस्तित्व समाप्त हो गया है:**
  - एंडरसन ग्लेशियर, क्लार्क ग्लेशियर और ग्लिसन ग्लेशियर (संयुक्त राज्य अमेरिका);
  - बाउमन ग्लेशियर (न्यूजीलैंड);
  - काल्डेरोन ग्लेशियर (इटली);
  - मार्शल सुर ग्लेशियर (अर्जेंटीना);
  - पिको हम्बोल्ट ग्लेशियर (वेनेजुएला);
  - पिजोल ग्लेशियर (स्विट्जरलैंड);
  - सारेन ग्लेशियर (फ्रांस) और
  - श्नीफर्नर ग्लेशियर (जर्मनी)।

ग्लेशियरों (हिमनद) के बारे में

- ग्लेशियर बर्फ और हिम का एक विशाल व बारहमासी संचय होता है। यह अपने वजन और गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव से **धीरे-धीरे ढलान की दिशा में आगे बढ़ता** रहता है।
- ग्लेशियर आमतौर पर उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं, जहां **औसत वार्षिक तापमान हिमांक बिंदु के करीब** होता है और **शीत ऋतु में वर्षण से अत्यधिक मात्रा में बर्फ** गिरती है। इससे उसका पर्याप्त संचय होता रहता है।

जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियरों के पिघलने के प्रभाव

- **जल चक्र में व्यवधान:** इससे ताजे जल की उपलब्धता और पारिस्थितिकी-तंत्र व कृषि के समक्ष खतरा उत्पन्न हो जाता है।
- **प्राकृतिक आपदाएं:** इससे हिमनदीय झील के तटबंध टूटने से आने वाली बाढ़ (GLOF) और हिमस्खलन का खतरा बढ़ जाता है।
- **समुद्री जल स्तर में वृद्धि:** इससे तटीय कटाव, पर्यावास की क्षति, जैव विविधता हानि आदि हो सकती है।
- **क्लाइमेट फीडबैक लूप:** इससे पृथ्वी की सतह का एल्बिडो कम हो जाता है, जिससे वैश्विक तापमान में वृद्धि होने लगती है।

ग्लेशियरों के संरक्षण के लिए शुरू की गई पहलें

- **वैश्विक स्तर पर:** संयुक्त राष्ट्र, यूनेस्को अंतर-सरकारी जल विज्ञान कार्यक्रम आदि द्वारा **वर्ष 2025 को 'ग्लेशियरों के संरक्षण का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष'** घोषित किया गया है।
- **भारत में शुरू की गई पहलें:** नेटवर्क प्रोग्राम ऑन हिमालयन क्रायोस्फीयर, क्रायोस्फीयर एवं जलवायु परिवर्तन अध्ययन केंद्र, हिमांश (HIMANSH) अनुसंधान केंद्र आदि।

- **ग्लेशियरों का महत्त्व:**
  - **जल भंडार:** ग्लेशियरों में पृथ्वी के लगभग **तीन-चौथाई ताजे जल** का भंडारण मौजूद है। इस प्रकार ये **ताजे जल के सबसे बड़े भंडार** हैं।
  - **कृषि:** ग्लेशियर कई क्षेत्रों में **सिंचाई का स्रोत** हैं। साथ ही, ग्लेशियरों से निकलने वाली नदियां कृषि के लिए भूमि को उपजाऊ भी बनाती हैं।
  - **जैव विविधता:** ग्लेशियरों के पिघलने से झीलों, नदियों और महासागरों में पोषक तत्व पहुंचते हैं। इससे **पादपप्लवकों (Phytoplankton) की संख्या में वृद्धि** होती है। पादपप्लवक जलीय खाद्य श्रृंखलाओं का आधार होते हैं।

उत्तर भारत की पहली परमाणु ऊर्जा परियोजना हरियाणा के गोरखपुर में स्थापित की जाएगी

गोरखपुर परियोजना में **दो जुड़वा (यानी 4) परमाणु ऊर्जा इकाइयां** स्थापित की जाएंगी। इनमें से प्रत्येक में एक **दाबयुक्त भारी जल रिएक्टर (Pressurized Heavy Water Reactor: PHWR)** होगा। इस परियोजना की **कुल क्षमता 2800 MW** होगी।

PHWR के बारे में

- PHWR में **शीतलक और मंदक** दोनों के लिए **भारी जल (D_2O)** का उपयोग किया जाता है तथा ईंधन के रूप में **प्राकृतिक यूरेनियम** का उपयोग किया जाता है।
  - भारी जल वह जल है, जिसमें सामान्य हाइड्रोजन के स्थान पर भारी हाइड्रोजन होता है। इस **भारी हाइड्रोजन** को **ड्यूटेरियम** भी कहा जाता है।
  - भारी जल का उपयोग इसलिए किया जाता है, क्योंकि यह अभिक्रिया के दौरान **न्यूट्रॉन को प्रभावी ढंग से धीमा** कर देता है तथा इसमें **न्यूट्रॉन के अवशोषण की संभावना भी कम** होती है।
- **भारत के PHWR संयंत्र का विकास**
  - इसके विकास की शुरुआत 1960 के दशक में **भारत-कनाडा परमाणु सहयोग** के माध्यम से शुरू हुई थी।
  - **राजस्थान परमाणु ऊर्जा स्टेशन (RAPS-1)** में पहला **220 MW का रिएक्टर** बनाया गया था।
  - **पोखरण-1 (1974)** के बाद, कनाडा ने भारत को परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम में सहयोग देना बंद कर दिया था। इसके बाद **भारत ने 220 MW के PHWR डिजाइन को स्वदेशी रूप से विकसित** किया था।

भारत में परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में हाल ही में हुए विकास

- **परमाणु ऊर्जा मिशन** के अंतर्गत **2047 तक देश की परमाणु ऊर्जा क्षमता को 100 गीगावाट (GW) तक बढ़ाने** का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।
  - वर्तमान में भारत की स्थापित परमाणु ऊर्जा क्षमता लगभग **8.1 GW** है।
- **भारत की सबसे पुरानी यूरेनियम खदान, झारखंड की जादुगुड़ा माइंस** में नए यूरेनियम भंडार की खोज की गई है।

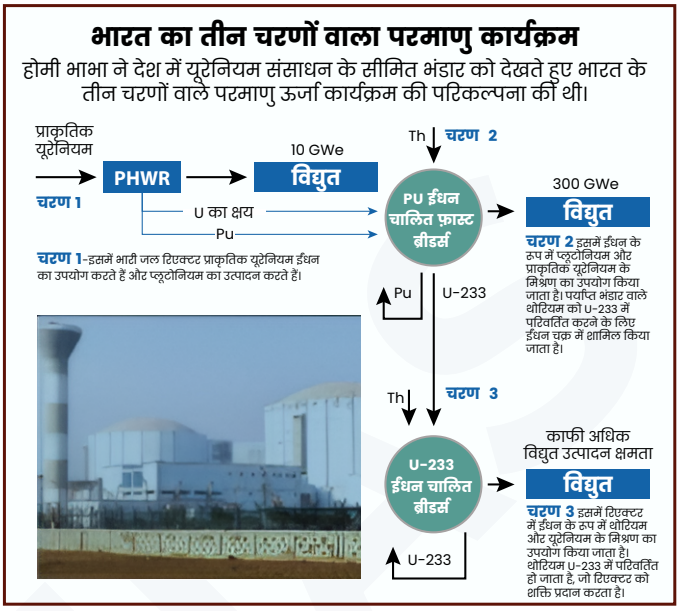

- **गुजरात के काकरापार में स्वदेशी रूप से निर्मित 700 MWe के PHWR की पहली दो इकाइयों (KAPS- 3 और 4)** ने वित्त वर्ष 2023-24 में **वाणिज्यिक परिचालन शुरू** कर दिया है।
- **देश के पहले प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (PFBR 500 मेगावाट)** ने 2024 में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं।
- NPCIL और NTPC ने परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के निर्माण एवं संचालन के लिए एक संयुक्त उद्यम **अश्विनी (ASHVINI)** का गठन किया है। **4x700 मेगावाट PHWR माही-बांसवाड़ा राजस्थान परमाणु ऊर्जा परियोजना** इसी के अंतर्गत शुरू की जा रही है।

नोट: भारत के परमाणु ऊर्जा मिशन पर और अधिक जानकारी के लिए कृपया 4 फरवरी, 2025 का न्यूज़ टुडे देखें।

ICRA की एक रिपोर्ट के अनुसार सरकारी प्रोत्साहनों के कारण वित्त वर्ष 2018 से म्युनिसिपल बॉण्ड्स में मजबूत वृद्धि देखी गई है

रिपोर्ट के अनुसार, **वित्त वर्ष 2018 से अब तक म्युनिसिपल बॉण्ड्स के माध्यम से 2,600 करोड़ रुपये से अधिक** राशि जुटाई गई है। यह आंकड़ा **वित्त वर्ष 1998-2005 के दौरान 1,000 करोड़ रुपये था।**

- **वित्त वर्ष 2025-26** के लिए, लगभग **1,500 करोड़ रुपये से अधिक के म्युनिसिपल बॉण्ड्स** जारी करने की संभावना है।

म्युनिसिपल बॉण्ड के बारे में

- म्युनिसिपल बॉण्ड एक **डेब्ट इंस्ट्रूमेंट है, जो नगर निगमों द्वारा संबंधित राज्य सरकारों की अनुमति** से जारी किया जाता है।
  - **भारत में पहली बार बेंगलुरु ने 1997** में म्युनिसिपल बॉण्ड जारी किया था। इसके बाद **1998 में अहमदाबाद नगर निगम** ने म्युनिसिपल बॉण्ड जारी किया था।
- ये बॉण्ड्स शहरी स्थानीय निकायों (ULBs) को **वित्तीय स्वायत्तता प्राप्त करने में मदद** करते हैं। इससे राज्य और केंद्रीय वित्तीय सहायता पर निर्भरता कम होती है।

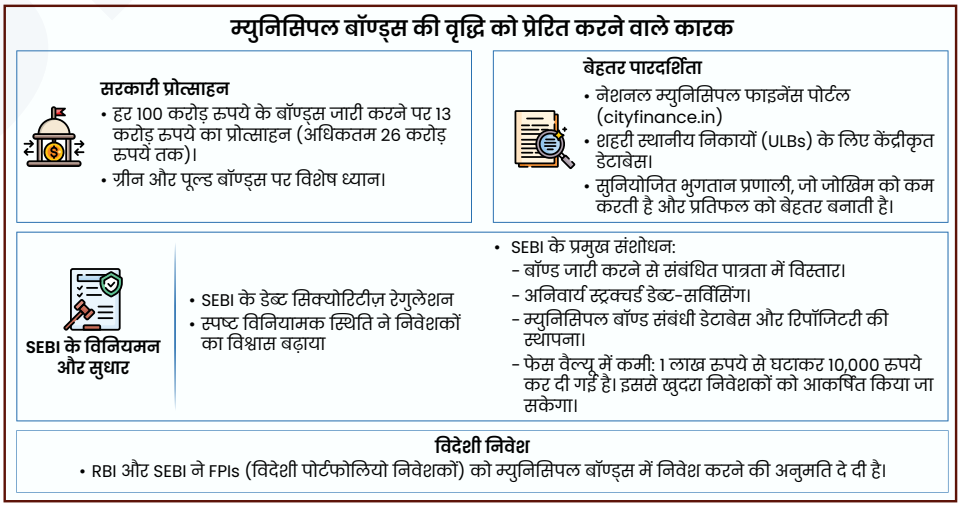

भारत में म्युनिसिपल बॉण्ड जारी करने के समक्ष चुनौतियां

- **अनुदान पर निर्भरता:** RBI की एक रिपोर्ट के अनुसार **शहरी स्थानीय निकाय अपने राजस्व के लगभग 38%** के लिए संबंधित राज्य द्वारा अनुदान पर निर्भर हैं।
- **लेखांकन संबंधी मुद्दे:** कोई **मानकीकृत मानदंड नहीं** होने के कारण असंगतताएं उत्पन्न हो रही हैं।
- **कम तरलता: कोई द्वितीयक बाजार नहीं होने के कारण इनमें निवेशकों की रुचि कम** हो रही है।
- **उच्च अनुपालन लागत और कमजोर क्रेडिट प्रोफ़ाइल** बाजार पहुंच को सीमित करते हैं।

म्युनिसिपल बॉण्ड मार्केट को मजबूत करने हेतु उपाय:

- **कर-मुक्त बॉण्ड जारी करके** खुदरा निवेशकों को आकर्षित किया जा सकता है, जबकि **ग्रीन बॉण्ड** अंतर्राष्ट्रीय फंडिंग को आकर्षित कर सकता है।
- RBI के नए मानदंडों के तहत **उच्च प्रतिफल की पेशकश** इसमें वाणिज्यिक बैंकों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है।

संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (UNESCO/ यूनेस्को) ने 'संयुक्त राष्ट्र विश्व जल विकास रिपोर्ट, 2025' प्रकाशित की

इस रिपोर्ट में **पारिस्थितिकी-तंत्र, अर्थव्यवस्थाओं और समाजों को बनाए रखने में पहाड़ों एवं अल्पाइन ग्लेशियर्स (वाटर टावर्स) की महत्वपूर्ण भूमिका** का उल्लेख किया गया है।

पर्वतीय पारिस्थितिकी-तंत्र

- **पारिस्थितिकी-तंत्र:** वैश्विक पर्वतीय क्षेत्र के लगभग 40% भाग पर वनों का विस्तार है। इसके अलावा, पर्वतों पर अधिक ऊंचाई पर घास के मैदान और अल्पाइन टुंड्रा वनस्पति मिलती है।
- **जल विनियमन:** दुनिया की दो-तिहाई सिंचित कृषि पहाड़ों से बहकर आने वाले जल पर निर्भर करती है।
- **कार्बन भंडारण:** पहाड़ी मिट्टी (विशेष रूप से पर्माफ्रॉस्ट युक्त) में लगभग **66 पेटाग्राम (Pg)** मृदा जैविक कार्बन जमा होता है, जो वैश्विक मृदा जैविक कार्बन का **4.5%** है।
- **जैव विविधता:** दुनिया के **34 जैव विविधता हॉटस्पॉट्स में से 25 पहाड़ी क्षेत्रों** में स्थित हैं। इनमें उच्च स्थानिक जैव विविधता पाई जाती है। ये हॉटस्पॉट्स महत्वपूर्ण कृषि और औषधीय पादपों के जीन पूल का संरक्षण करते हैं।

पर्वतीय पारिस्थितिकी-तंत्र की सुभेद्यताएं:

- **ग्लेशियर्स की हानि:** एंडीज पर्वत श्रृंखला में 1980 के दशक से अब तक **30-50%** ग्लेशियर पिघल चुके हैं। हिंदू कुश हिमालय में **2100 तक 50% ग्लेशियर के पिघलने** की संभावना है। ग्लेशियर्स का तेजी से पिघलना **जल सुरक्षा के समक्ष एक बड़ा खतरा** है।
- **वाटरमेलन स्नो (ग्लेशियर ब्लड) इफेक्ट:** ग्लेशियर्स की सतह पर होने वाला लाल शैवाल प्रस्फुटन इनके एल्बिडो को कम करता है, जिसके कारण बर्फ तेजी से पिघलने लगती है।
- **शहरीकरण:** यह जल विज्ञान चक्र को गंभीर रूप से बदलता है, जो संसाधनों के अत्यधिक दोहन का कारण बनता है और पारिस्थितिकी संतुलन को बिगाड़कर आपदाओं को बढ़ाता है।
- **वायुमंडलीय प्रदूषण:** लंबी दूरी तक पहुंचने वाले प्रदूषण के कारण बर्फ के कोर और झील की तलछट में ब्लैक कार्बन की मात्रा में वृद्धि दर्ज की गई है।

हिंदू कुश हिमालय (HKH) के बारे में

- यह वैश्विक स्तर पर **सबसे बड़ा और सबसे ऊंचा अल्पाइन पारिस्थितिकी-तंत्र** है। इसकी समुद्र तल से औसत ऊंचाई **4,000 मीटर** है। यह **3500 किमी** में फैला हुआ है।
- इसमें **1,00,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले ग्लेशियर हैं, जो आर्कटिक और अंटार्कटिका के बाहर बर्फ एवं हिम का सबसे बड़ा भंडार** है। ये **12,000 से ज्यादा झीलों और 10 से अधिक प्रमुख नदियों** के लिए जल का स्रोत है।
- हिंदू कुश हिमालय, तिब्बत का पठार, पामीर, हेंगदुआन, तियान शान और किलियन पर्वत मिलकर **5 मिलियन वर्ग किमी** में फैले हुए हैं। इन्हें **पृथ्वी का "थर्ड पोल" या "एशिया का वाटर टावर"** भी कहा जाता है।

पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण (राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली के तहत एकीकृत पेंशन योजना का संचालन) विनियम, 2025 अधिसूचित किए गए

विनियमन में **एकीकृत पेंशन योजना (UPS)** के **कार्यान्वयन के लिए एक विस्तृत रूपरेखा** प्रदान की गई है (इन्फोग्राफिक देखें)।

विनियमों से संबंधित मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

- **नोडल मंत्रालय:** वित्त मंत्रालय।
- **किन पर लागू होंगे:** निम्नलिखित तीन श्रेणियों के केंद्र सरकार के कर्मचारी एकीकृत पेंशन योजना (UPS) में शामिल हो सकते हैं। **हालांकि, एक बार UPS का चयन करने के बाद, यह निर्णय अंतिम और अपरिवर्तनीय होगा:**
  - 1 अप्रैल 2025 तक मौजूदा केंद्र सरकार के कर्मचारी जो, NPS के तहत शामिल हैं।
  - 1 अप्रैल 2025 को या उसके बाद केंद्र सरकार की सेवाओं में भर्ती हुए नए कर्मचारी।
  - 31 मार्च 2025 तक सेवानिवृत्त NPS के तहत शामिल कर्मचारी या यदि कर्मचारी का निधन हो चुका है तो उसका कानूनी जीवनसाथी।
- **UPS के तहत लाभ के लिए सेवा अवधि के मामले में पात्रता**
  - **सुपरएनुएशन:** यह **10 वर्ष की सेवा के बाद उपलब्ध** होगा और सेवानिवृत्ति की तारीख से देय होगा।
  - **स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति:** इसके लिए **25 वर्षों की सेवा अनिवार्य है,** पेंशन का भुगतान अनुमानित सुपरएनुएशन तिथि से शुरू होगा।
  - **कौन पात्र नहीं हैं:** सेवा से निष्कासित, **बर्खास्त या इस्तीफा देने वाले कर्मचारी।**
  - **आनुपातिक भुगतान:** यदि सेवा अवधि **10 वर्षों से अधिक लेकिन 25 वर्षों से कम है,** तो आनुपातिक रूप से कम पेंशन प्रदान की जाएगी।
- **निवेश एवं निधि प्रबंधन**
  - **व्यक्तिगत कोष:** कर्मचारी **निवेश पैटर्न और पेंशन फंड का चयन** कर सकते हैं।
  - **पूल कॉर्पस:** इसे **सरकार द्वारा स्वीकृत पेंशन फंड्स द्वारा प्रबंधित और वार्षिक रूप से ऑडिट** किया जाएगा।

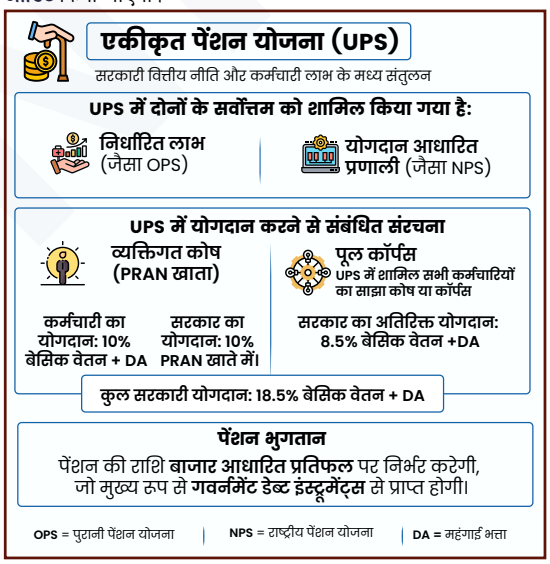

अन्य सुर्ख़ियां

अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति (IOC)

जिम्बाब्वे की पूर्व तैराक **क्रिस्टी कोवेंट्री** IOC की **पहली महिला अध्यक्ष** बनीं।

- IOC एक **गैर-लाभकारी स्वतंत्र** निकाय है, जो **ओलंपिक गतिविधियों का प्रबंधन** करता है।

अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति (IOC) के बारे में

- **मुख्यालय:** लॉज़ेन (ओलंपिक राजधानी), स्विट्ज़रलैंड।
- **उत्पत्ति: पेरिस में आयोजित प्रथम ओलंपिक कांग्रेस** में स्थापित (1894)।
- **विज़न:** खेल के माध्यम से एक बेहतर विश्व का निर्माण करना।
- **वित्त-पोषण:** पूर्णतः **निजी तौर पर वित्त-पोषित तथा अपने राजस्व का 90%** सभी स्तरों पर खेलों एवं एथलीटों के विकास के लिए वितरित करता है।
- **कार्य:**
  - **ओलंपिक खेलों में शामिल किए जाने वाले खेलों और मेजबान शहर के चयन** का निर्णय लेना।
  - एथलीटों, राष्ट्रीय ओलंपिक समितियों (NOCs) और खेल महासंघों सहित ओलंपिक हितधारकों के बीच **सहयोग को सुगम** बनाना।
    - **भारतीय ओलंपिक संघ (IOC)** भारत के NOC के रूप में कार्य करता है।

'कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सहायता योजना

'कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सहायता' योजना **केंद्रीय क्षेत्रक** की एक योजना है। इसे **संस्कृति मंत्रालय** ने कार्यान्वित किया है।

- इस योजना का उद्देश्य देश भर में **कला और संस्कृति के क्षेत्र में काम करने वाले पात्र सांस्कृतिक संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान** करना है।
- **योजना के घटक:**
  - राष्ट्रीय स्तर वाले सांस्कृतिक संगठनों को वित्तीय सहायता;
  - कल्चरल फंक्शन एंड प्रोडक्शन ग्रांट (CFPG);
  - हिमालय की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और विकास के लिए वित्तीय सहायता;
  - बौद्ध/ तिब्बती संगठन के संरक्षण और विकास के लिए वित्तीय सहायता;
  - स्टूडियो थियेटर सहित भवन निर्माण अनुदान के लिए वित्तीय सहायता;
  - संबद्ध सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए वित्तीय सहायता;
  - अमूर्त सांस्कृतिक विरासत;
  - घरेलू त्यौहार व मेले आदि।

REDD+

फॉरेस्ट डिक्लेरेशन असेसमेंट स्पेशल रिपोर्ट 'ट्रांसफॉर्मिंग फॉरेस्ट फाइनेंस' ने इस तथ्य को उजागर किया है कि REDD+ ने वन वित्त हेतु जितनी वित्तीय सहायता की आवश्यकता थी, उसे पूरा नहीं किया है।

REDD और REDD+ के बारे में

- REDD+ वस्तुतः जलवायु परिवर्तन संबंधी शमन समाधान है। इसे वारसॉ फ्रेमवर्क 2013 के अंतर्गत UNFCCC पक्षकरों ने विकसित किया है।
- REDD (वनों की कटाई और वन निम्नीकरण से होने वाले उत्सर्जन को कम करना) विकासशील देशों में वन विनाश को कम करने पर केंद्रित है।
  - इसमें REDD+ के माध्यम से अतिरिक्त वन-संबंधी गतिविधियों जैसे संधारणीय वन प्रबंधन और वन कार्बन स्टॉक को बढ़ाया गया है।
- REDD+ के अंतर्गत विकासशील देशों को वनों की कटाई में कमी के मामले में परिणाम-आधारित भुगतान प्राप्त होता है। इससे उनके जलवायु संरक्षण प्रयासों को प्रोत्साहन मिलता है।

नवरोज

प्रधान मंत्री ने नवरोज के अवसर पर शुभकामनाएं दीं।

नवरोज के बारे में

- फ़ारसी भाषा में नवरोज का अर्थ है- "नया दिन"। यह एक प्राचीन पर्व है जो वसंत के आगमन और अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है।
- यह त्योहार जोरोस्ट्रियन धर्म से जुड़ा हुआ है और इसका इतिहास 3,000 वर्षों से भी अधिक पुराना है। यह वसंत विषुव (आमतौर पर 20 या 21 मार्च) के अवसर पर मनाया जाता है।
- नवरोज का उत्सव बाल्कन क्षेत्र, ब्लैक सी बेसिन, कॉकेशस, मध्य एशिया, मध्य पूर्व और अन्य क्षेत्रों में मनाया जाता है।
- यह शांति और एकता के मूल्यों को बढ़ावा देता है। यह अलग-अलग पीढ़ियों के बीच और परिवारों में सामंजस्य एवं मिलता को बढ़ावा देता है।
- इसे संयुक्त राष्ट्र की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की रिप्रेजेंटेटिव लिस्ट में शामिल किया गया है।

GPS स्पूफिंग

नवंबर 2023 और फरवरी 2025 के बीच भारतीय सीमा क्षेत्र में GPS इंटरफेरेंस और स्पूफिंग की 465 घटनाएं दर्ज की गई थी।

GPS स्पूफिंग के बारे में

- यह GPS द्वारा प्रसारित संकेतों में हेरफेर करने वाली एक दुर्भावनापूर्ण तकनीक है।
- स्पूफिंग GPS रिसीवर को गलत लोकेशन या समय की जानकारी प्रदान करता है। इससे नेविगेशनल सिस्टम, डिवाइस और उपग्रह-आधारित अन्य उपयोगों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।
  - आधुनिक एवियोनिक्स प्रणालियों के प्रदर्शन के लिए सही GPS डेटा बहुत महत्वपूर्ण होता है। एवियोनिक्स प्रणालियों में फ्लाइट कंप्यूटर, ऑटोपायलट और टक्कर-निवारण प्रणालियां शामिल हैं।
- GPS स्पूफिंग में आमतौर पर सिग्नल जनरेटर या अन्य परिष्कृत उपकरणों का उपयोग करके नकली GPS सिग्नल प्रसारित किए जाते हैं, जो उपग्रह आधारित वास्तविक सिग्नलों से अधिक प्रबल होते हैं।

वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट 2025

यह रिपोर्ट ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के वेलबीइंग रिसर्च सेंटर ने गैलप, संयुक्त राष्ट्र सतत विकास समाधान नेटवर्क (UN-SDSN) और एक स्वतंत्र संपादकीय बोर्ड के साथ मिलकर प्रकाशित की है।

रिपोर्ट के बारे में

- यह रिपोर्ट कैंट्रिल सेल्फ-एंकरिंग स्ट्राइविंग स्केल (कैंट्रिल लैडर) से प्राप्त एक प्रश्न पर आधारित है।
  - स्केल का सबसे ऊपरी हिस्सा 'बहुत खुशहाल जीवन' का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि स्केल का सबसे नीचे वाला हिस्सा 'बिल्कुल भी खुशहाल नहीं' जीवन का प्रतिनिधित्व करता है।
- रैंकिंग के लिए अपनाए गए मापदण्ड:
  - प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद,
  - सामाजिक समर्थन,
  - जन्म के समय स्वस्थ जीवन प्रत्याशा,
  - जीवन के विकल्प चुनने की स्वतंत्रता,
  - उदारता और
  - भ्रष्टाचार की धारणाएं।
- सबसे खुशहाल देश: फिनलैंड (पहला स्थान), इसके बाद डेनमार्क और आइसलैंड का स्थान है।
- भारत का स्थान: 147 देशों में से 118वां स्थान।

माउंट किलाउएआ ज्वालामुखी

संयुक्त राज्य अमेरिका के हवाई में स्थित किलाउएआ ज्वालामुखी एक बार फिर से सक्रिय हुआ।

किलाउएआ ज्वालामुखी के बारे में

- अवस्थिति: यह हवाई ज्वालामुखी राष्ट्रीय उद्यान के भीतर स्थित है और मौना लोआ के नजदीक है।
  - मौना लोआ पृथ्वी का सबसे बड़ा सक्रिय ज्वालामुखी है।
  - मौना लोआ और किलाउएआ दुनिया के सबसे सक्रिय शील्ड ज्वालामुखी हैं।
  - किलाउएआ की मैग्मा प्रणाली मौना लोआ से अलग है।
- सक्रियता:
  - उद्गार दरार क्षेत्र और शिखर काल्डेरा से होता है।
  - 1780 ईस्वी से किलाउएआ ज्वालामुखी में बार-बार उद्गार हो रहा है। हालांकि, 1924 से 1952 के बीच यह ज्वालामुखी शांत था।
  - किलाउएआ ज्वालामुखी के 2018 के उद्गार में एक क्यूबिक किलोमीटर से अधिक बेसाल्ट का रिसाव हुआ था। यह उद्गार 1983 में शुरू हुए बड़े उद्गार का हिस्सा था।

यूनिफाइड लॉजिस्टिक्स इंटरफ़ेस प्लेटफ़ॉर्म (ULIP/ यूलिप)

यूलिप ने 100 करोड़ से अधिक एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस (API) लेन-देन दर्ज करके एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है।

यूलिप के बारे में

- इसे 2022 में राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति के तहत लॉन्च किया गया था। इसका उद्देश्य लॉजिस्टिक्स क्षेत्रक को एकीकृत, दक्ष और प्रौद्योगिकी-सक्षम बनाना है।
- यह एक डिजिटल गेटवे है, जो उद्योग जगत को API-आधारित एकीकरण के माध्यम से विविध सरकारी प्रणालियों से लॉजिस्टिक्स से संबंधित डेटासेट उपलब्ध कराता है।
- इसे नीति आयोग ने तैयार किया है।
- इस प्लेटफॉर्म का प्रबंधन NICDC लॉजिस्टिक्स डेटा सर्विसेज लिमिटेड (NLDSL) द्वारा किया जाता है।
  - NLDSL भारत सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाले राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास एवं कार्यान्वयन ट्रस्ट (NICDIT) और जापान की प्रमुख IT कंपनी NEC कॉरपोरेशन के बीच एक संयुक्त उद्यम है।

सुर्ख़ियों में रहे स्थल

सूरीनाम (राजधानी: पैरामारिबो)

भारत ने पैशन फ्रूट उद्योग को बढ़ावा देने के लिए सूरीनाम को 1 मिलियन डॉलर मूल्य की मशीनरी भेजी।

- वर्तमान में सूरीनाम की आबादी में भारतीय प्रवासियों की हिस्सेदारी 27% से अधिक है।

सूरीनाम के बारे में

- भौगोलिक अवस्थिति:
  - यह दक्षिण अमेरिका का सबसे छोटा देश है।
  - सीमावर्ती देश: इसके पूर्व में फ्रेंच गुयाना, दक्षिण में ब्राजील, और पश्चिम में गुयाना स्थित है।
  - सीमावर्ती जल निकाय: इसके उत्तर में अटलांटिक महासागर अवस्थित है।
- भौगोलिक विशेषताएं:
  - प्रमुख पर्वत श्रृंखलाएं: बाखॉइस पर्वत और वान आश वान वाइक पर्वत।
  - उच्चतम बिंदु: विल्हेल्मिना पर्वतमाला में जुलियाना टॉप।
  - प्रमुख नदियां: सूरीनाम, मारोनी, कोरन्टाइन आदि।

अहमदाबाद बेंगलूरु भोपाल चंडीगढ़ दिल्ली गुवाहाटी हैदराबाद जयपुर जोधपुर लखनऊ प्रयागराज पुणे राँची